नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय

स्नातकोत्तर- प्रथम वर्ष ,पत्र-3

गोदान की दलित अवधारणा

गोदान प्रेमचंद का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है । इसका मूल्यांकन अनेक विचारों से किया जा सकता है यह । सर्वविदित है कि गोदान मुख्यत: ग्रामीण जीवन की कथा है और प्रमुखत: किसानों के शोषण की गाथा है, पर इसमें गहरी जीवन के पक्षधर जमींदार, ताल्लुकेदार , वकील, प्रोफ़ेसर, सुगर मिल मालिक के मैनेजर, डॉक्टर आदि के जीवन का सच्चा चित्रण भी है । उपन्यासकार ने अपने आसपास के जीवन और समाज को खंडित दृष्टि से नहीं देखा है । क्योंकि गांव और शहर दो मील इकाई होते हुए भी कई दृष्टियों से पारस्परिक रूप से विखंडित नहीं हैं। गोदान की त्रासदी शोषण की बुनियाद पर अवलंबित है ।

गोदान की कथावस्तु में दलित जीवन का मार्मिक चित्रण हुआ है जिसकी और समीक्षकों का ध्यान कम ही गया है । प्रेमचंद ने दलितों के जीवन पर उस समय लिखा , जब हिंदी में दलित साहित्य की अवधारणा उजागर नहीं हुई थी । हिंदी ही क्यों ? मराठी साहित्य में भी दलित साहित्य की अवधारणा नहीं थी । मराठी साहित्य में इसकी चर्चा वर्ष 1965 से आरंभ हुई ।हिंदी में इसकी चर्चा 1990 के आसपास आरंभ हुई । प्रेमचंद की अनेक रचनाओं में दलित मात्र अपनी प्रमुख भूमिका के साथ चित्रित हुए हैं ।

गोदान का नायक होरी है जिसके जीवन की त्रासदी उपन्यास का केंद्र बिंदु है । वह थोड़ी सी जमीन का मालिक है , जिस पर वह खेती करता है । छोटा किसान होकर होरी का जीवन दलित जैसा ही तो है । हम उसे किसान के साथ-साथ दलित भी मान सकते हैं । दातादीन जब होरी से कहता है - 'तुम शूद्र हुए तो क्या, हम ब्राह्मण हुए तो क्या, हैं तो सब एक ही घर के ।' दातादीन होरी को बुआई के बीज देकर खेत की फसल में आधा हिस्सा मांगते हुए यह बात कहता है । वह उसे शूद्र समझते हुए भी उससे लाभ कमाना चाहता है । अत: इसमें कोई संदेह नहीं कि होरी एक शूद्र है अर्थात एक दलित है, और वह एक छोटा किसान भी है । वह ब्याज के बोझ से दवा है , वह अपने गांव में छुआछूत का भी शिकार है । वह ब्राह्मण दातादीन के बराबर नहीं बैठ सकता । किसान होकर भी उसकी हैसियत दलित से बेहतर नहीं है । वह अपने खेत में गेहूं पैदा करता है किंतु जौ की रोटी खाकर गुजारा करता है जो प्राय: दलित प्राणी ही खाने के लिए विवश है ।

होरी का बेटा गोवर्धन हुआ जो बाद में केवल गोबर होकर रह गया । धन के बिना व्यक्ति गोबर से अधिक क्या होगा । पर उसका प्रेम भोला की बेटी झुनिया से हो गया । भोला गाय -भैंस का दूध बेचता है अर्थात वह अहीर है, जो अपने को गोबर की जाति से ऊंचा समझता है । अहीर की बेटी झुनिया दलित गोबर के घर बैठ जाय यह भोला को कैसे मंजूर होता । वह और उसका बेटा जंगी और कामता झुनिया की जान के दुश्मन हो गये । होरी की भलमनसाहत से झुनिया की जान बची और घर बसा । जब होरी और धनिया ने झुनिया को अपने घर में शरण दी तो इस अधर्म के विरोध में गांव में थू-थू होने लगी और थानेदार ने गांव में आकर अपना रावणी रूप का प्रदर्शन किया। इसके विपरीत पंडित दातादीन के बेटे मातादीन ने सीलिया को बिना ब्याहे घर में रख लिया तो गांव में चुप्पी छा गई । ठाकुर झींगुरी सिंह ने तीन पत्नियां एक ही घर में रख लीं तो गांव में आसमान नहीं टूट पड़ा । 'समरथ कहुँ नहिं दोषु गोसाईं' इसी कथन को प्रेमचंद ने गोदान में दिखाया है । दलित को ना प्रेम करने का अधिकार है और ना सम्मान पूर्वक जीवन जीने का अधिकार । यदि यह अधिकार गोबर को प्राप्त होता तो वह गर्भवती झुनिया को अपने घर में छोड़कर गायब ना हो जाता । वह अपने को इस फजीहत से बचाने के लिए ही घर से चुपके पलायन कर जाता है। दलित जीवन की यह त्रासदी केवल गोबर के साथ ही नहीं घटती है , उसका पूरा परिवार इसका जलालत

झेलता है । उधर दातादीन का बेटा मातादीन ने एक दिन होरी के घर में आकर झुनिया का हाथ पकड़ लिया और गोबर की बुराई करते हुए कहने लगा -'आदमी का धर्म है जिसकी बाँह पकड़े उसे निभाए । यह क्या कि एक आदमी की जिंदगी खराब कर दी और दूसरा घर ताकने लगे ।' मातादीन के अनुसार 'आदमी का धरम' केवल गोबर के लिए था । उसके लिए कतई नहीं, जो दूसरे के घर में विशेष चाहत के वशीभूत ताक-झाँक कर रहा था । उसकी नजर में दलित वर्ग के लिए अलग नैतिकता और उच्च वर्ग के लिए एक दूसरी नैतिकता है । चमारिन सिलिया के प्रति ठाकुर झींगुरी सिंह से कहे गए दातादीन के कथन से स्पष्ट जाहिर होता है - 'सिलिया हमारी चौखट नहीं लाँघने जाती, बर्तन -भाड़े छूना तो दूसरी बात है । मैं यह नहीं कहता कि मतई (मातादीन)यह बहुत अच्छा काम कर रहा है कि औरत को छोड़ दे। मैं तो खुल्लम-खुल्ला कहता हूं स्त्री जाति पवित्र है ।" पोंगा पंडित दातादीन के लिए औरत जाति पवित्र है किंतु चमारिन सिलिया उसकी चौखट नहीं लाँघ सकती है । यह दोहरी नैतिकता प्रेमचंद को स्वीकार नहीं थी । उन्होंने खुलकर सिलिया का पक्ष लिया और दलित स्त्री को अपनी सहानुभूति दी । सिलिया का बाप हरखू दातादीन को चुनौती देते हुए कहता है - हम आज या तो मातादीन को चमार बनाकर छोड़ेंगे या उनका और अपना रकत एक कर देंगे ...तुम हमें ब्राह्मण नहीं बना सकते ,हम तुम्हें चमार बना सकते हैं ... हमारी इज्जत लेते हो तो अपना करम हमें दो। सिलिया की मां भी रणचंडी की भांति दलित नारी के विद्रोह को यों आवाज देती है- 'हम सिलिया को अकेले ना ले जाएंगे , उसके साथ मातादीन को भी ले जाएंगे , जिसने उसकी इज्जत बिगाड़ी है । तुम बड़े नेमी धरमी हो, उसके साथ सोओगे, लेकिन उसके हाथ का पानी न पियोगे। इस पाखंड पर प्रेमचंद ने चोट की है। हरखू दातादीन को चुनौती देता है और मातादीन को चमार बनाने का संकल्प दुहराता है । प्रेमचंद के शब्दों में - दो चमारों ने लपककर मातादीन के हाथ पकड़ लिए , तीसरे ने झपट कर उसका जनेऊ तोड़ डाला - दो चमारों ने मातादीन के मुंह में एक बड़ी सी हड्डी का टुकड़ा डाल दिया । इस प्रकार दलितों के विद्रोह को प्रेमचंद ने वाणी दी है , सहानुभूति दी है।

आवश्यक निर्देश - विद्यार्थीगण को निर्देशित किया जाता है कि पाठ्य पुस्तक में दिए गए अंश का ध्यान पूर्वक अध्ययन करें और प्रस्तुत अभ्यास के प्रश्नों का तर्क आधारित उत्तर देने का प्रयास करें। विद्यार्थियों / परीक्षार्थियों के मार्गदर्शन हेतु यह 'ई कंटेंट' संक्षिप्त रूप में तैयार किया गया है ।

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी

नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय